International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 11-07-2026, Accepted: 11-08-2026, Published: 26-08-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 38-40

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन श्रुत एवं अविश्रुत गाथाएँ

डॉ. श्यामता साहू
सहायक प्राध्यापक, डॉ.सी.वी.रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.3.8060

सारांश
राष्ट्रीय आन्दोलन के इस महान यज्ञ में सामान्य भारतीय जन–समुदाय भी अपना सर्वस्व बलिदान करते हुए संयुक्त होता चला गया था। वस्तुतः यह यथार्थ इतिहास है कि भारती की महान आजादी लाने में केवल कुछ बड़े राष्ट्रीय नेताओं का ही योगदान नहीं रहा था, वरन् भारत की पवित्र भूमि के कण–कण से उपजे जन–जन के स्नेह और अनुराग का भी इसमें अद्‌भुत संगम था। इनके सक्रिय कार्यक्रमों और गतिविधियों ने ब्रिटानी हुकूमत की ईंट से ईंट बजा दी और भारत में ब्रिटिश–साम्राज्य की इमारत में न भरी जा सकने वाली दरारें डाल दी थीं। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय महिलाओं ने भी डट कर भाग लिया था। महिलाओं ने अपने भविष्य की चिंता न कर अपना सर्वस्व समर्पण करते हुए ब्रिटिश प्रभुत्व के विरूद्ध सक्रिय आन्दोलनों में निरन्तर कार्य किया था। आधुनिक उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद की एक कर्मठ महिला द्रोपदी देवी ने भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में तन–मन से भाग लिया था। आप कांग्रेसी विचारधारा से तो ओत–प्रोत थीं ही कम्यूनिस्ट दर्शन को भी अपने अपनाया था। श्रमिकों के हितों की लड़ाई में भी द्रोपदी देवी अत्यधिक सक्रिय रही थी। द्रोपदी देवी को सक्रिय आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका अपनाने के लिये कई बार जेल भी जाना पड़ा, परन्तु जेल की यातनायें भी द्रोपदी देवी को अपने उद्देश्य से विचलित नहीं कर सकी थीं, इसके बाद तो इन्होने और अधिक सक्रियता से राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया था। द्रोपदी देवी पर गांधीवाद का बहुत गहरा प्रभाव था, अतः ये धर्म और समाज सुधार के कार्यो में विशेष सक्रिय रही थी। वास्तव में ये सभी साधारण लोग आजादी के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर रहे थे। ये फांसी के फंदे को वरमाला बनाकर और मौत को अपना जीवन साथी बना कर बलिदान कर रहे थे। स्पष्ट है कि नारा सबका एक था, मंजिल सभी की एक थी, कुर्बानी जिसके लिए हही वो चाहत एक थी। अनेकता में जिसके लिये एकतार्थी वह महानता आजादी की थी।

मूल शब्दः समुदाय, राष्ट्रीय, स्वतंत्रता, आन्दोलन

मानव सभ्यता के इतिहास में भारत – राष्ट्र सदैव से विश्व का एक अनुपम और विशिष्ट अंग रहा था और अभी भी है। दुर्भाग्य से इसे 1757 ई. से 1947 ई. तक अर्थात् लगभग दो शताब्दियों से भी अधिक तक विदेशी अंग्रेजी शासन की पीड़ायें सहन करनी पड़ी थी। स्वार्थी चालाक ब्रिटिश जाति ने भारत को कुछ प्रदान भी अवश्य किया, परन्तु इसने भारतीयों का शोषण बहुत अधिक किया, इससे मानवता भी कभी–कभी कांप उठा करती थी। तभी भारतीयों ने उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी के मध्य से राष्ट्रीय आंदोलन का अंकुरण किया। फिर इस श्रृंखला में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये बीसवीं शताब्दी ईसवी की उषा–बेला से राष्ट्रीय आन्दोलन को तीव्रता से आगे बढ़ाया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के इस महान यज्ञ में सामान्य भारतीय जन–समुदाय भी अपना सर्वस्व बलिदान करते हुए संयुक्त होता चला गया था। वस्तुतः यह यथार्थ इतिहास है कि भारती की महान आजादी लाने में केवल कुछ बड़े राष्ट्रीय नेताओं का ही योगदान नहीं रहा था, वरन् भारत की पवित्र भूमि के कण–कण से उपजे जन–जन के स्नेह और अनुराग का भी इसमें अद्‌भुत संगम था। इनके सक्रिय कार्यक्रमों और गतिविधियों ने ब्रिटानी हुकूमत की ईंट से ईंट बजा दी और भारत में ब्रिटिश–साम्राज्य की इमारत में न भरी जा सकने वाली दरारें डाल दी थीं।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन

इतिहास की जो सामान्य पुस्तकें विद्यार्थियों और पाठकों के सामने प्रस्तुत हैं उनमें पुस्तक की सीमा में बड़े राष्ट्रीय नेताओं के अतिरिक्त आजादी के लिये लड़ने वाले सामान्य जन–जन के चेहरे गुमनाम ही रहे है। ये भारतीयों की श्रद्धांजलि से भी महरूम है। कुछ सामान्य राष्ट्रभक्तों के महान कार्यों का विवरण दृष्टव्य है। जिससे पता चलता है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के 1857ई. से प्रारंभ होने वाले संग्राम में और फिर 1885ई. से पुनः अंकुरित होने वाले स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्पूर्ण भारत के जन–जनों की विशेष भूमिका रही थी।

पवित्र गंगा और यमुना के प्रान्त उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से मेरठ कमिश्नरी में सामान्य स्त्री पुरूषों नें 1857ई. से ही स्वतंत्रता आन्दोलन के पवित्र यज्ञ में अपनी आहुति दी थी। इस राष्ट्र–यज्ञ में अपना नाम विशिष्ट अक्षराकं में अंकित करवाने वाले एक महान सेनानी मौहर सिंह भी रहे थे। अब 1997ई. में जून जुलाई के समय में दलितोद्धार की महाशक्ति उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती के द्वारा मुजफ्फरनगर जनपद के जिस शामली नगर को पुनः तहसील बनाया गया है। महान राष्ट्रभक्त मौहर सिंह उसी शामली क्षेत्र के ही निवासी थे। इनके हृदय में अंग्रेजों से बढ़ते हुए साम्राज्य और शोषण के विरूद्ध राष्ट्रभक्ति की लहरें उठने लगी थी। 1857 ई. के समय में जब ब्रिटिश प्रभुत्व के विरूद्ध राष्ट्रभक्त सेनानियों ने विद्रोह करने की तैयारियॉ शुरू की तो मौहर सिंह जी ने भी इस पवित्र स्वतंत्रता आदोलन के यज्ञ में आहुतियां देने के लिये सभी प्रकार की तैयारियाँ शुरू कर दी।

राष्ट्रीय – चेतना के पुंज मौहर सिंह ने राष्ट्रभक्तें की एक टुकड़ी संगठित कर ली। इसे बल पर एक छोटी सी लड़ाई कर मौहर सिंह शामली तहसील को 1857 ईसवी के स्वतंत्रता संग्राम के काल में ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने में सफल हुए।

स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने ढंग का एक अलग ही योगदान देने वाले लास्वत लाहोर निवासी कालूराम हलवाई का नाम सामने आते ही देशभक्ति का जहॉ संचार होता है, वहॉ जिह्वा में भी मीठा स्वाद घुल जाता है। कालूराम स्वतंत्रता–आन्दोलन में लगे हुए राष्ट्रभक्त भारतीयों से बहुत स्नेह रखते थे। ये सबसे मुख्य अनुराग और करूणा से भरा हुआ यह कार्य करते थे कि अपनी हलवाई की दुकान पर मुफ्त में ही स्वतंत्रता आन्दोलन कारियों को मलाईदार दूध पिलाया करते थे। यत्र–तत्र कठिनाई में पड़े हुए देषभक्त के लिये आवास आदि का भी प्रबंध करते थे।

ब्रिटिश प्रशासन और पुलिस की गतिविधियों से भी आन्दोलनकारियों को परिचित कराते रहते थे। आन्दोलनकारियों को उनके आपसी संदेश पहुॅचाने में भी कालूराम अपार सहायता करते थे।

कालूराम हलवाई के यहॉ राजगुरू, चन्द्रशेखर, शहीद भगतसिंह आदि ने भी अपने सहयोगियों के साथ चखा था। इस तरह कालूराम ने क्रांतिकारियों को अपने यहॉ बैठ कर विचार विमर्श करने का अवसर दिया। करूणा, दया, प्रेम और भारतीय संस्कृति के आदर्शों की पुनः स्थापना की।

श्रुत एवं अविश्रुत गाथाएं

पण्डित मुंशीलाल शर्मा ने अपने कार्यो से राष्ट्र–प्रेम की एक अमिट और प्रेरणादायी भावना स्थापित की थी। गांधीवादी राष्ट्रभक्त मुंशीलाल का जन्म पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के बागपत जनपद के अंगदपुर जौहड़ी ग्राम में एक कृषक–ब्राह्मण परिवार में हुआ था। असहयोग आन्दोलन के अंकुरित होने वाले वर्ष 1914ई. में इनका जन्म हुआ था। कक्षा सात तक शिक्षा प्राप्त की और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय में ये अपने राष्ट्र–प्रेमी मित्रमण्डल के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में संयुक्त हो गये। राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे से इन्हें अटूट स्नेह था इसके गौरव को बढ़ाने में इन्होने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी थी।

भारत के स्वाभिमान का बीज अंकुरित करने वाले युवकों में जितेन मुखर्जी का नाम बड़े सुन्दर ढंग से अंकित है। कलकत्ता के समीप के एक ग्राम का यह भोला भाला बालक था। एक बार कलकत्ता के गोर बाजार में एक अंग्रेज पुलिस अफसर वहॉ से गुजरने वाले भारतीयों पर डंडा फटकार रहा था। भोले भाले जितेन ने इसका कारण पूछा तो उत्तर मिला – यहॉ से भारतीय को गुजरना मना है। जितेन को यह स्थिति बहुत बुरी लगी और उसने निडर होकर डंडा अंग्रेज अफसर से छीन लिया और उस डंडे को अफसर के सिर पर ही दे मारा। जितेन मुखर्जी फिर उस अफसर को धमकाते हुए वहॉ से भाग लिया था। तब से वह स्वतंत्रता आन्दोलन की उग्र घटनाओं से संयुक्त होता चला गया था। जुल्म के विरूद्ध संघर्ष करने में उसे अपार आनन्द आता था। इसने अपने व्यक्तिगत जीवन के सुखों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जेल मे भी बंद रहा, परन्तु फिर भी शहीद होने से इसे जरा भी भय नही लगता था। एक ठोस पृष्ठभूमि का निर्माण करने में सहायक होकर एक दिव्य संदेश प्रतिष्ठित कर जितेन मुखर्जी 1915ई. में मात्र अठारह साल की आयु में शहीद हो गया। इस नवयुवक ने भारतीय गौरव को बड़ी निडरता से आलोकित किया। स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रातः को बड़ा शानदार बनाया। आज के नवयुवकों के लिए इसका बलिदान प्रेरणा स्त्रोत हैं।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय महिलाओं ने भी डट कर भाग लिया था। महिलाओं ने अपने भविष्य की चिंता न कर अपना सर्वस्व समर्पण करते हुए ब्रिटिश प्रभुत्व के विरूद्ध सक्रिय आन्दोलनों में निरन्तर कार्य किया था। आधुनिक उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद की एक कर्मठ महिला द्रोपदी देवी ने भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में तन–मन से भाग लिया था। आप कांग्रेसी विचारधारा से तो ओत–प्रोत थीं ही कम्यूनिस्ट दर्शन को भी अपने अपनाया था। श्रमिकों के हितों की लड़ाई में भी द्रोपदी देवी अत्यधिक सक्रिय रही थी।

द्रोपदी देवी को सक्रिय आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका अपनाने के लिये कई बार जेल भी जाना पड़ा, परन्तु जेल की यातनायें भी द्रोपदी देवी को अपने उद्देश्य से विचलित नहीं कर सकी थीं, इसके बाद तो इन्होने और अधिक सक्रियता से राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया था। द्रोपदी देवी पर गांधीवाद का बहुत गहरा प्रभाव था, अतः ये धर्म और समाज सुधार के कार्यो में विशेष सक्रिय रही थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी द्रोपदी देवी समाज सुधार के कार्यो में लगी रही। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बड़ौत नगर में इन्होंने अपना स्थायी निवास कायम कर लिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षो में द्रोपदी देवी शर्मा का एक सबसे सराहनीय कार्य यह रहा था कि ये महिलाओं की अपने व्यक्तिगत ज्ञान और अनुभव के अनुसार चिकित्सा किया करती थीं, यह इनका कार्य बहुत महान था, चूॅकि उस समय किसी भी महिला चिकित्सक की उपलब्धता बड़ौत नगर में नहीं थी। द्रोपदी देवी षर्मा वास्तव में एक निडर और वीरांगना महिला थी।

मेरठ मण्डल के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले महान सपूतों मे शांति स्वरूप जैन का नाम भी विशेष अंकित है। आप एक वैश्य–जैन कुल में उत्पन्न होने के पश्चात् भी पर एक शेर की तरह निडर हृदय रखते है। आपने अपने समय में अपने साथियों के साथ निडरता से स्वतंत्रता आन्दोलन के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया। पुलिस की यातनाओं से शांति स्वरूप जरा भी भयभीत नहीं हुए थे।

अनंत लक्ष्मण कन्हारे स्वाभिमान और शक्ति का दूसरा नाम था। 17–18 वर्ष के इस नवयुवक के हृदयमें देश भक्ति कूट–कूट कर भरी थी। यह नवयुवक स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी गतिविधियों से संयुक्त हो गया था। इसके जीवन की मुख्य घटना थी कि इसने जालिम प्रकृति के कलैक्टर जैक्सन की 21 दिसंबर 1909ई. को अपने साथियों के साथ मिलकर हत्या की थी।

विनायक नारायण देशपांडे राष्ट्र से प्रेम करने वाला महान युवक था। अंग्रेजों के दमन चक्र के विरूद्ध यह क्रान्तिकारियों के साथ मिल गया था। 1909 ई. के समय में बंगाल और महाराष्ट्र में सरकार बहुत कठोर दमन चक्र चला रही थी। अंग्रेज अधिकारी मनमाने अत्याचार किया करते थे। एक अंग्रेज अधिकारी विलियम गोल्फ–खेल में जब व्यस्त था, तो उसकी गेंद एक किसान की बैलगाड़ी के नीचे आ गयी। विलियम ने उस निर्दोष किसान को इतना पीटा की वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। विलियम पर जब खून का मुकदमा चला तो जैक्सन ने इसे निर्दोष साबित कर दिया।

तब जैक्सन की हत्या की योजना बनायी गयी। अनन्त लक्ष्मण कन्हारे के साथ विनायक देशपांडे और कृष्ण गोपाल कर्वे को इसकी हत्या करने का दायित्व सौंपा गया था। विजयानन्द थियेटर में विनायक देशपांडे ने निडरता पूर्वक नियोजित योजना के अनुसार अपने दोनों साथियों कलैक्टर जैक्सन पर गोली चलायी। वार सफल रहा था। विनायक नारायण देशपाण्डे अपने दोनों साथियों अनन्त कन्हारे और कृष्ण गोपाल कर्वे के साथ बन्दी बना लिये गये। बड़ी वीरता से इन्होने कैद खाने की यातनायें सहन की। अन्त में 10 अप्रैल, 1910ई. को ये तीनों साथी हंसते – हसंते फांसी चढ़ गये। भारत माता के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए विनायक नारायण देशपांडे ने शहीदों में अपना नाम अंकित कर दिया।

वस्तुत लाखों युवक–युवतियों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी। तब यह आजादी की लड़ाई बन गयी थी। इसी से स्वतंत्रता का अमृत–फल मिला था। इस प्रकार भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में कई ऐसे नाम है, कई ऐसे महिला और पुरूष है जिन्होनें देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से महान कार्य करते हुए अपने प्राणों को बलिदान दियज्ञं

उपसंहार

गुलामी की जिस आग में सारा देश जल रहा था। उसके विरूद्ध स्वतंत्रता की चाहत रखने वाले चेहरे सभी भारतीय तो नहीं थे, परन्तु फिर भी अनेक थे। इनमें अधिकांश ही नहीं सभी अपने समय के राष्ट्रीय दलों के साथ संयुक्त थे। फिर अपने दल के नेताओं के निर्देशन में स्वतंत्रता के लिये दृढ़ संकल्प थे, इनमें से

कुछ सीधे आक्रमण करते थे, कुछ छिपकर सक्रिय थे। कुछ हिंसक मार्ग अपनाते थे तो कुछ अहिंसक साधना से राष्ट्रीय आन्दोलन में साधक बने हुए थे।

वास्तव में ये सभी साधारण लोग आजादी के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर रहे थे। ये फांसी के फंदे को वरमाला बनाकर और मौत को अपना जीवन साथी बना कर बलिदान कर रहे थे। स्पष्ट है कि नारा सबका एक था, मंजिल सभी की एक थी, कुर्बानी जिसके लिए हही वो चाहत एक थी। अनेकता में जिसके लिये एकतार्थी वह महानता आजादी की थी।

संदर्भ सूची

1. आर.सी.मजूमदार की ''भारतीय इतिहास'' भारतीय इतिहास की विस्तृत विवरण।
2. विपिन चंद्र पाल की ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का विस्तृत विवरण।
3. राम गोपाल की ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का विस्तृत विवरण।
4. सुमित सरकार की ''मॉडर्न स्वतंत्रता संग्राम'' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का विस्तृत विवरण।
5. टार्चर की ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का विस्तृत विवरण।